ISSN: 2249 - 7862 (Print)
Aureole 2019 Vol. XI December 2019 26

चित्रा मुद्गल की नारीवादी दृष्टि : 'एक ज़मीन अपनी' में

शोबिता

सारांश

मानव जीवन के तमाम पक्षों की विस्तृत अभिव्यक्ति उपन्यास विधा से संपन्न होती हैं। समय और समाज के अनुरूप रचना बदल रही है। समकालीन उपन्यासकार भोगे हुए जीवन यथार्थ की सही अभिव्यक्ति करने में सक्षम दिखते है। यथार्थ का स्पष्ट बयान करनेवाले समकालीन सृजकों में चित्र मुद्गल का स्थान उल्लेखनीय है।

कथाकार और समाज सेविका कें रूप में ख्याति प्राप्त चित्रा मुद्गल नारी वादी लेखिका है। उनके कथा साहित्य का मुख्य स्वर 'नारी मुक्ति' रहा है। चित्रा जी की नारी आत्मसम्मान से पूर्ण, पुरुषों के आगे हार न माननेवाली, और अपने जीवन को स्वयं उभारनेवाली है। चित्रा जी के लिए लेखन सामाजिक दायित्व और समाज की परम्परागत स्थितियों पर प्रहार करने का माध्यम है।

चित्रा मुद्गल का पहला उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में आधुनिक विज्ञापन जगत की प्रतियोगिता और विसंगतियोँ में जीनेवाली नारी की खामोशियों को चित्रित किया है। इसके अलावा कामकाजी महिलाओं की आशा - आकांक्षाओं को भी प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका अंकिता विज्ञापन की दुनिया में अपने पहचान बनाने को सघर्षरत नारी है। अंकिता पारिवारिक संस्कारों को मननेवाली औरत है। वह कविता लिखती है और प्रोफेसर बनना चाहती है। घरवालों के विरोध को न मानकर वह सुधांशु से प्रेम- विवाह करती है। लेकिन शादि के बाद उसे महसूस होता है कि पति के घर में वह एक नौकरानी बन गई है। अंकिता को स्वयं लगता है कि, "मैं सिर्फ गृहिणी ही नहीं हूँ।.... एक स्त्री भी हूँ।.... आखिर सुबह से रात के बीच कोई एक क्षण ऐसा नहीं हो सकता जिसे मैं नितांत अपने लिए जी सकूँ।... कागज़- कलम लेकर बैठ सकूँ।", [1] लेकिन सुधांशु से उसके साथ कभी नहीं बन पाया। इसलिए वह सुधांशु से कहती है, "सुधांशु जी, औरत बोनसाई का पौधा नहीं

है.... जब भी चाहा उसकी जडे काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया।" [2] अंत में अंकिता सुधांशु से रिश्ता तोडकर अपने पैरों में खडे होने का निर्णय कर लती है। वह हरींद्र की सहायता से 'फिल्मरस' में कॉपी राइटर के रूप में काम करना शुरु करती है।

Keywords: *नारी, नारीवाद, परंपरागत छवि, विज्ञापन*

वहाँ काम करते वक्त वह अनुभव करती है कि इस दुनियाँ में अन्य कार्यक्षेत्रों की अपेक्षा जबरदस्त प्रति स्पर्द्धा है। नारी को सिर्फ एक शरीर के रूप में देखने की पुरुष मानसिकता को भी चित्रा जी ने बखूबी चित्रित किया है। "...अंकिता चाहे कितनी ही अच्छी कॉपी लिख ले, लेकिन पुरुष की मानसिकता उसे अपने से नीचे ही मानते, उसे एक जिस्म के रूप में ही देखेगी [3]",

अंकिता के चरित्र की सब से बडी विशेषता यह है कि उसे नैतिक स्खलन तनिक भी स्वीकार्य नही है। विज्ञापन के क्षेत्र में काम करने पर भी रंग और चकाचौध के प्रति अंकिता नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। विज्ञापन - फिल्मों के निर्देशकों द्वारा होनेवाले देह-भोग का भी वह घोर विरोध करती है।

'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास की दूसरी प्रमुख पात्र है नीता। नीता का चरित्र अंकिता के विपरीत है। विज्ञापनों की मोहक दुनिया में आशा-निराशा झेलती अपने आकर्षक देह को वह न्योछावर करती है। नीता एक सूपर मोडल बनना चाहती है। उसका मोहक शरीर उसकी कामयाबी की इस यात्रा को सुगम बनाता है। इसलिए अन्य लोग उसे गिरी हुई युवती मानते है। नीता भारतीय संस्कृति और नारी की अवधारणा को इन्कार करती है और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भी है। वह अपनी कामयाबी केलिए किसी हद तक गिर जाने केलिए तैयार होती है। लेकिन सुधीर के साथ असफल सम्बन्ध बेटी मानसी के जन्म के साथ टूट जाता है। अंत में अपनी बेटी मानसी को अंकिता के गोद में छोड़कर आत्महत्या कर लेती है।

अंकिता और नीता दोनों का संबंध विज्ञापन की दुनिया से है। उस दुनिया में व्यक्ति से वस्तु में परिवर्तित होना सब की नियति है। अंकिता संस्कार और मूल्य को महत्व देती है। लेकिन नीता अर्थ तथा प्रतिष्ठा को सबकुछ मानती है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नीता यौन स्वछंदता और उन्मुक्त भोग को नारी मुक्ति मानती है। स्त्री की परंपरागत छवि को वह नकरात्मक दृष्टिकोण से देखती है। लेकिन अंकिता को नैतिक स्खलन बिलकुल भी पसंद नहीं है। इसलिए वह किसी प्रकार का समझौता करने केलिए तैयार नहीं होती। पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत नीता आत्महत्याके पूर्व लिखे पत्र में अपनी गलतियों को स्वीकार करती हुई लिखती हैं। "मैंने मूल्य तोडे पति -पत्नि के

दासत्व भरे संबंधों से मुक्त होने की कामना लिए शुद्ध रूप से नारी-पुरुष संबंधों की गहराई और उदात्तता को जीना चाहा... लेकिन [4]"

उपन्यास में बनते- बिगड़ते पारिवारिक संबंधों का चित्रण बखूबी किया है। अंकिता की माँ की मौत, बंटवारे की चर्चा, भाईयाँ के बीच कलह, अंकिता द्वारा संबंधों को बनाए रखने की कोशिश आदि कथा गति को आगे बढाती है। इस उपन्यास में अंकिता और नीता दो प्रतीक है। वे नारी मुक्ति की चेतना के दो ध्रुवों का प्रतिनिधित्व करते है। समाज में व्याप्त नारी शोषण एवं अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करने केलिए नारी को अपनी ज़मीन होना अनिवार्य है, इस तथ्य की ओर प्रस्तुत उपन्यास द्वारा लेखिका प्रकाश डालती है।

संदर्भ सूची

1. एक ज़मीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृ - 24

2. वही, पृ - 235

3. नया ज्ञानोदय, नवम्बर, 2004

4. एक ज़मीन अपनी, चित्रा मुद्गल, पृ- 272